Aib Chhupaao Jannat Paao (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 223
Weekly Booklet : 223

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" की एक क़िस्त बनाम

# ऐब छुपाओ जन्नत पाओ

सफ़हात 18

ग़ीबत ईमान में फ़साद पैदा करती है 04
ग़ीबत से तौबा का त़रीक़ा 04
औरत पर तोहमत लगाने के सबब हलाकत 10

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.


| | | |
|---|---|---|
| नामे रिसाला | : | **ऐब छुपाओ जन्नत पाओ** |
| सिने तृबाअ़त | : | रबीउ़ल आख़िर **1443** हि., नवम्बर **2021** ई. |
| ता'दाद | : | 000 |
| नाशिर | : | **मक्तबतुल मदीना** |


मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

## ऐ़ब छुपाओ जन्नत पाओ

येह रिसाला (**ऐ़ब छुपाओ जन्नत पाओ**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट** (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email :hind.printing92@gmail.com

## क़ियामत के रोज़ ह़सरत

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

## किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून किताब ''ग़ीबत की तबाह कारियां'' सफ़हा 275 ता 293 से लिया गया है।

# ऐब छुपाओ जन्नत पाओ

**दुआए अ़त्तार :** या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला **''ऐब छुपाओ जन्नत पाओ''** पढ़ या सुन ले, उसे लोगों के ऐब छुपाने वाला बना, दुन्या व आख़िरत में उस की ऐब पोशी फ़रमा और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबहो शाम मुझ पर दस दस बार दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा बरोज़े क़ियामत मेरी शफ़ाअ़त उसे पहुंच कर रहेगी।

(الترغیب والترہیب، 1/261، حدیث:29)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## जो अपने ऐबों को जान लेता है

**ह़ज़रते** बीबी राबिआ़ अ़दविय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہَا फ़रमाती थीं : बन्दा जब **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की महब्बत का मज़ा चख लेता है **अल्लाह** पाक उसे ख़ुद उस के अपने **ऐबों** पर मुत्त़लअ़ फ़रमा देता है पस इस वज्ह से वोह दूसरों के ऐबों में मश्ग़ूल नहीं होता। (बल्कि अपने **ऐबों** की इस्लाह़ की त़रफ़ मुतवज्जेह रहता है)

(تنبیہ المغترین، ص197)

## छुपी हुई बातों की टटोल मत करो !

ग़म ज़दों के ग़म दूर करने वाले ख़ुश अख़्लाक़ आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : ऐ वोह लोगो जो ज़बान से ईमान लाए और ईमान उन के दिलों में दाख़िल नहीं हुवा, मुसल्मानों की **ग़ीबत** न करो और इन की छुपी हुई बातों की टटोल न करो, इस लिये कि जो शख़्स अपने मुसल्मान भाई की छुपी हुई चीज़ की **टटोल** करेगा, **अल्लाह** पाक उस के ऐब ज़ाहिर फ़रमा देगा और जिस के **अल्लाह** पाक ऐब ज़ाहिर करेगा। उस को रुस्वा कर देगा, अगर्चे वोह अपने मकान के अन्दर हो। (ابوداود، 4/354، حدیث:4880)

**ऐ आशिक़ाने रसूल !** किसी मुसल्मान के ऐबों की टोह में नहीं पड़ना चाहिये, रब्बे काएनात पारह 26 **सूरतुल हुजुरात** आयत नम्बर 12 में इर्शाद फ़रमाता है : **''وَلَا تَجَسَّسُوْا'' तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐब न ढूंडो। **सदरुल** अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : या'नी मुसल्मानों की **ऐबजूई** न करो और उन के छुपे हुए हाल की **जुस्तजू** में न रहो जिसे **अल्लाह** पाक ने अपनी सत्तारी से छुपाया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 863)

## अल्लाह पाक ऐब पोशी फ़रमाएगा

हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि अपने रब से हम गुनाह गारों को बख़्शवाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक मुसल्मान दूसरे मुसल्मान का भाई है न उस पर ज़ुल्म करता है और न उसे बे यारो मददगार छोड़ता है और जो अपने भाई की हाजत पूरी करे **अल्लाह** पाक उस की हाजत पूरी करता है और जो किसी मुसल्मान की तक्लीफ़ दूर करे **अल्लाह** पाक क़ियामत की तक्लीफ़ों में से उस की तक्लीफ़ दूर फ़रमाएगा

और जो किसी मुसल्मान की **ऐबपोशी** करे तो ख़ुदाए सत्तार क़ियामत के रोज़ उस की ऐब पोशी फ़रमाए। (مسلم، ص1394، حدیث:6580)

## ऐब छुपाओ जन्नत पाओ

**हज़रते** अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि सरकारे दो जहान, मदीने के सुल्तान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो शख़्स अपने भाई का ऐब देख कर उस की **पर्दा पोशी** कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। (مُسند عبد بن حمید، ص279 حدیث:885)

## जहन्नम में चीख़ रहे होंगे !

**ऐ आशिक़ाने रसूल !** سُبْحٰنَ اللّٰہ ! ऐब पोशी की फ़ज़ीलत व अहम्मिय्यत के भी क्या कहने ! जो चीज़ आख़िरत के लिये जिस क़दर अहम होगी शैतान उसी क़दर उस के पीछे लगेगा। लिहाज़ा मुसल्मान को मुसल्मान की ऐब पोशी से रोकने के लिये पूरा ज़ोर लगा देता है और नौबत यहां तक आ पहुंची है कि आज मुसल्मानों की अक्सरिय्यत मुसल्मानों की ऐब दरियों और **ग़ीबतों** में मश्ग़ूल है। और अक्सर कोई किसी की ख़ामी ढकने के लिये तय्यार ही नहीं बिला तकल्लुफ़ बल्कि बसा अवक़ात तो फ़ख़्रिया दूसरों के आगे बयान कर देता है, उन में से अगर किसी ने किसी का **ऐब** कभी छुपा भी लिया तो बस आ़रिज़ी तौ़र पर, जूं ही कुछ नाराज़ी हुई कि जितने भी ऐब छुपा कर रखे थे सब पर से एक दम पर्दा उठा देता है ! आह ! ख़ौफ़े आख़िरत ही जाता रहा ! यक़ीनन जहन्नम की सज़ा सही नहीं जा सकेगी। हज़रते ईसा **रूहुल्लाह** عَلَیْہِ السَّلَام फ़रमाते हैं : कितने ही सिह्हत मन्द बदन, ख़ूब सूरत चेहरे और मीठा बोलने वाली ज़बानें कल जहन्नम के तबक़ात में चीख़ रहे होंगे ! (مکاشفۃ القلوب، ص152)

*औरों के ऐब छोड़ नज़र ख़ूबियों पे रख    ऐबों की अपने भाई मगर ख़ूब रख परख*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللہ! اَسْتَغْفِرُاللہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

## ग़ीबत ईमान में फ़साद पैदा करती है

**हज़रते** ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : "**ग़ीबत** बन्दए मोमिन के ईमान में इस से भी जल्दी फ़साद पैदा करती है जितनी जल्दी **आकिला** की बीमारी उस के जिस्म को ख़राब करती है।" (आकिला पहलू में होने वाले उस फोड़े को कहते हैं जिस से गोश्त पोस्त (खाल) सड़ जाते हैं और गोश्त झड़ने लगता है) मज़ीद फ़रमाया करते : ऐ इब्ने आदम ! तुम उस वक़्त तक ईमान की ह़क़ीक़त को नहीं पा सकते जब तक लोगों के **उ़यूब** तलाश करना तर्क न कर दो, जो **उ़यूब** तुम्हारे अपने अन्दर पाए जाते हैं तुम उन की इस्लाह़ शुरूअ़ कर दो और उन **ऐबों** को अपनी ज़ात से दूर कर लो। पस जब तुम ऐसा करोगे तो येह चीज़ तुम्हें अपनी ही ज़ात में मश्ग़ूल कर देगी। और **अल्लाह** पाक के नज़्दीक इस त़रह़ का बन्दा सब से ज़ियादा पसन्दीदा है। (ذم الغیبۃ لابن ابی الدنیا، ص93،97، رقم:54،60)

## ग़ीबत से तौबा का त़रीक़ा

**अल्लाह** पाक की बारगाह में नदामत के साथ तौबा व इस्तिग़्फ़ार कीजिये। जिस जिस की **ग़ीबत** की है उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत कीजिये। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : ग़ीबत के कफ़्फ़ारे में येह है कि जिस की **ग़ीबत** की है, उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करे, येह कहे : اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَہٗ या'नी इलाही ! हमें और उसे बख़्श दे। (الدعوات الکبیر للبیہقی، 2/294، حدیث:507) अगर नाम याद न रहे हों तो मश्वरतन अ़र्ज़ है कि हो सके तो रोज़ाना वक़्तन फ़

वक़्तन यूं कहिये : **या अल्लाह !** मैं ने आज तक जितनी भी **ग़ीबतें** की हैं उन से तौबा करता हूं। या **अल्लाह** पाक ! मेरी और आज तक मैं ने जिन जिन मुसल्मानों की **ग़ीबत** की है उन सब की अपने महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े मग़्फ़िरत फ़रमा। (याद रहे ! क़बूलिय्यते तौबा के लिये येह भी शर्त है कि उस गुनाह से दिल में बेज़ारी और आयिन्दा न करने का अ़ज़्म हो।)

*मेरी और जिन जिन की मैं ने की है ग़ीबत या ख़ुदा मग़्फ़िरत फ़रमा दे, फ़रमा सब पे रह़मत या ख़ुदा*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

## बन्दे से भी मुआ़फ़ी मांगे

**जिस** की "ग़ीबत" की उस को पता नहीं चला तो उस से मुआ़फ़ी मांगना ज़रूरी नहीं। **अल्लाहु** ग़फ़्फ़ार के दरबार में तौबा व इस्तिग़्फ़ार कीजिये और दिल में पक्का अ़ह्द कीजिये कि आयिन्दा कभी किसी की **ग़ीबत** नहीं करूंगा। अगर उस को मा'लूम हो गया है तो उस के पास जा कर **ग़ीबत** के मुक़ाबिल उस की जाइज़ ता'रीफ़, और उस से महब्बत का इज़्हार कीजिये, ताकि उस का दिल ख़ुश हो और आ़जिज़ी के साथ अ़र्ज़ कीजिये कि मैं ने जो आप की **ग़ीबत** की है उस पर नादिम हूं मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये। अब बिलफ़र्ज़ वोह मुआ़फ़ न भी करे तब भी اِنْ شَآءَاللهُ आख़िरत में मुवाख़ज़ा न होगा। हां अगर **रस्मी तौर** पर (SORRY कह दिया) बिला इख़्लास मुआ़फ़ी मांगी और उस ने मुआ़फ़ कर भी दिया तब भी आख़िरत में मुवाख़ज़े (या'नी पूछगछ) का ख़ौफ़ बाक़ी है।

(बहारे शरीअ़त, 3/181 हिस्सा : 16)

*सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 171)

## तौबा के बा'द जिस की ग़ीबत की थी उस को पता चल गया तो ?

**ग़ीबत** से तौबा कर लेने के बा'द मुग़्ताब या'नी जिस की **ग़ीबत** की थी उस को पता चला तो अब क्या करना चाहिये ! इस ज़िम्न में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़तावा रज़विय्या जिल्द 24 सफ़ह़ा 411 पर नक़्ल करते हैं : **रौज़तुल उ़लमा** में है कि मैं ने ह़ज़रते **अबू मुह़म्मद** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से पूछा कि अगर **ग़ीबत** उस शख़्स तक नहीं पहुंची जिस की **ग़ीबत** की गई थी तो **ग़ीबत** करने वाले के लिये **तौबा** फ़ाएदे मन्द होगी या नहीं ? उन्हों ने फ़रमाया : हां । (फ़ाएदे मन्द होगी) क्यूं कि उस ने बन्दे के ह़क़ के मुतअ़ल्लिक़ होने से पहले **तौबा** कर ली है, **ग़ीबत** बन्दे का ह़क़ (या'नी ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद में शामिल) उस वक़्त होगी जब उस तक पहुंच जाएगी । मैं ने कहा कि अगर **तौबा** के बा'द उस शख़्स तक **ग़ीबत** पहुंच जाए ? फ़रमाया कि उस की **तौबा** बात़िल नहीं होगी बल्कि **अल्लाह** करीम दोनों को बख़्श देगा । **ग़ीबत** करने वाले को **तौबा** की वज्ह से और जिस की **ग़ीबत** की गई उसे उस तक्लीफ़ की वज्ह से जो उसे **ग़ीबत** सुन कर हुई है क्यूं कि **अल्लाह** पाक करीम है उस के मुतअ़ल्लिक़ येह नहीं कहा जा सकता कि वोह किसी की तौबा क़बूल फ़रमा कर रद फ़रमा दे बल्कि **दोनों को बख़्श** देगा ।

(منح الروض للقاری، ص440)

*डर था कि इ़स्यां की सज़ा, अब होगी या रोज़े जज़ा*

*दी उन की रह़मत ने सदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 110)

## जिस की ग़ीबत की उस को पता चल गया..... फिर मर गया

इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जिस की **ग़ीबत** की (उस को पता चल गया और अब) वोह मर गया या ग़ाइब हो गया उस से किस त़रह़ मुआ़फ़ी मांगे ? येह मुआ़मला बहुत दुश्वार हो गया ! लिहाज़ा अब चाहिये कि ख़ूब नेकियां करे ताकि क़ियामत में अगर इस की नेकियां **ग़ीबत** के बदले दे दी जाएं जब भी उस के पास नेकियां बाक़ी रह जाएं । (ردالمحتار،9/677)

**ह़िकायत :** ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ नक़्ल करते हैं : मेरे भाई अफ़्ज़लुद्दीन رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : नेक आ'माल ज़ियादा करता हूं ताकि क़ियामत के दिन मेरे पास आ'माल में से कुछ न कुछ हो, जो कि उन को दिया जा सके जिन का मेरे ज़िम्मे (हुक़ूक़ुल इ़बाद के तअ़ल्लुक़ से) माल या इ़ज़्ज़त का कुछ मुत़ालबा हो । (تنبیہ المغترین،ص191)

*बाज़ारे अ़मल में तो सौदा न बना अपना  सरकार ! करम तुझ में ऐ़बी की समाई है*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 192)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

## हाए शामते नफ़्स !

**आह !** आह ! आह ! वोह मज्मूअ़ए ग़फ़्लत व सरापा मा'सियत कहां जाए जो कि नफ़्स की शामत के सबब ला ता'दाद अफ़्राद की **ग़ीबत** कर चुका हो, मरने या ग़ाइब होने वालों की बात तो दूर रही, जानने पहचानने के बा वुजूद मुरव्वत की मनों वज़्नी बेड़ियों में जकड़े होने के बाइ़स मुआ़फ़ी मांगने से शरमाता हो ! हाए ! हाए ! हाए ! अगर बरोज़े क़ियामत ढेर सारे अहले हुक़ूक़ नेकियां लेने और अपने अपने गुनाह सर लदवाने पर तुल गए तो क्या बनेगा । आह ! आह ! आह ! सदक़े **या रसूलल्लाह** !

*तुझे हरगिज़ गवारा हो नहीं सकता कि महशर में जहन्नम की तरफ़ रोता हुवा तेरा गदा निकले*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## दुन्या ही में मुआफ़ करवा लेने में आफ़िय्यत है

हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जिस के ज़िम्मे अपने भाई का आबरू वग़ैरा किसी बात का मज़्लिमा (या'नी ज़ुल्म) हो, उसे लाज़िम है कि यहीं उस से मुआफ़ी चाह ले क़ब्ल उस वक़्त के आने के कि वहां न दीनार होंगे और न दिरहम अगर इस के पास कुछ नेकियां होंगी तो ब क़दर उस के हक़ के इस से ले कर उसे दी जाएंगी वरना उस के गुनाह इस पर रखे जाएंगे। (بخاری، 2/128، حدیث:2449)

*सब ने सफ़े महशर में ललकार दिया हम को ऐ बे कसों के आक़ा अब तेरी दुहाई है*

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 192)

## बोहतान की ता'रीफ़

**किसी** शख़्स की मौजूदगी या ग़ैर मौजूदगी में उस पर झूट बांधना **बोहतान** कहलाता है। (حدیقہ ندیہ، 2/200) इस को आसान लफ़्ज़ों में यूं समझिये कि **बुराई** न होने के बा वुजूद अगर पीठ पीछे या रू बरू वोह बुराई उस की तरफ़ मन्सूब कर दी तो येह **बोहतान** हुवा मसलन पीछे या मुंह के सामने रियाकार कह दिया और वोह रियाकार न हो या अगर हो भी तो आप के पास कोई सुबूत न हो क्यूं कि **रियाकारी** का तअ़ल्लुक़ बातिनी अमराज़ से है लिहाज़ा इस तरह किसी को **रियाकार** कहना **बोहतान** हुवा।

## बोहतान से तौबा का तरीक़ा

**बोहतान** से तौबा करे, इस तौबा में तीन बातों का पाया जाना ज़रूरी है : ﴾1﴿ आयिन्दा बोहतान को तर्क करने का पक्का इरादा करना

﴾2﴿ **जिस का ह़क़ ज़ाएअ़ किया, मुम्किन हो** तो उस से मुआ़फ़ी चाहना मसलन साह़िबे ह़क़ ज़िन्दा और मौजूद है नीज़ मुआ़फ़ी मांगने से कोई झगड़ा या अ़दावत पैदा नहीं होगी ﴾3﴿ (जिन) लोगों (के सामने बोहतान लगाया उन) के सामने अपने **झूट** (या'नी बोहतान) का इक़रार करना या'नी येह कहना कि जो मैं ने **बोहतान** लगाया था उस की कोई ह़क़ीक़त नहीं। (حدیقہ ندیہ، 2/209) आ़शिकाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, ''बहारे शरीअ़त'' (312 सफ़ह़ात) ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 181 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बोहतान की सूरत में तौबा करना और मुआ़फ़ी मांगना ज़रूरी है बल्कि जिन के सामने बोहतान बांधा है उन के पास जा कर येह कहना ज़रूरी है कि मैं ने झूट कहा था जो फ़ुलां पर मैं ने **बोहतान** बांधा था। (बहारे शरीअ़त, 3/181 ह़िस्सा : 16)

नफ़्स के लिये यक़ीनन येह सख़्त गिरां है मगर दुन्या की थोड़ी सी ज़िल्लत उठानी आसान मगर आख़िरत का मुआ़मला इन्तिहाई संगीन है, ख़ुदा की क़सम ! दोज़ख़ का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। लिहाज़ा पढ़िये और लरज़िये :

## बोहतान का अ़ज़ाब

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसल्मान की बुराई बयान करे जो उस में नहीं पाई जाती तो उस को **अल्लाह** पाक उस वक़्त तक दोज़ख़ियों के कीचड़, पीप और ख़ून में रखेगा जब तक कि वोह अपनी कही हुई बात से न निकल आए।

(ابوداود، 3/427، حدیث:3597)

## गुनाह के इल्ज़ाम का अ़ज़ाब

लोगों पर गुनाहों की **तोहमत** लगाने वालों के अ़ज़ाब की एक दिल हिला देने वाली रिवायत मुलाह़ज़ा हो चुनान्चे जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में देखे हुए कई मनाज़िर का बयान फ़रमा कर येह भी फ़रमाया कि कुछ लोगों को **ज़बानों** से लटकाया गया था। मैं ने जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से उन के बारे में पूछा तो उन्हों ने बताया कि येह लोगों पर झूटी तोहमत लगाने वाले हैं। (شرح الصدور، ص182)

## शक्की मिज़ाजों को तम्बीह

**जो** शक्की मिज़ाज औ़रतें अपने मर्दों पर **तोह्मतें** धरतीं और इस त़रह़ की बातें करती हैं कि ❁ किसी औ़रत के चक्कर में है ❁ सब पैसे उसी को दे आता है वग़ैरा यूं ही जो वहमी मर्द अपनी औ़रतों पर इस त़रह़ गुनाह की **तोह्मतें** लगाते हैं कि ❁ इस की किसी के साथ "आशनाई" है ❁ अपने आशना को फ़ोन करती है ❁ उस से मिलती है ❁ गन्दे काम करवाती है वग़ैरा। उन को बयान कर्दा **इल्ज़ामे गुनाह** के अ़ज़ाब की रिवायत से इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये। इस ज़िम्न में एक **इ़ब्रत अंगेज़ ह़िकायत** मुलाह़ज़ा हो चुनान्चे

## औ़रत पर तोहमत लगाने के सबब हलाकत

**ह़ज़रते** अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه **शर्हुस्सुदूर** में नक़्ल करते हैं : एक शख़्स ने ख़्वाब में **जरीर ख़त़फ़ी** को देखा तो पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ या'नी **अल्लाह** पाक ने तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला किया ? तो उन्हों ने कहा : मेरी मग़्फ़िरत कर दी। मैं ने पूछा : मग़्फ़िरत का क्या सबब बना ? कहा : उस **तक्बीर** कहने पर जो मैं ने एक जंगल में कही

थी। मैं ने पूछा : फ़रज़्दक़ का क्या हुवा ? तो उन्हों ने कहा : अफ़्सोस पाक दामन औ़रतों पर **तोहमत** लगाने के बाइ़स वोह हलाकत में गिरिफ़्तार हुवा। (شرح الصدور، ص285، البدایۃ والنہایۃ، 6/409) **हाए !** हाए ! हाए ! हम ने न जाने ज़िन्दगी में कितनों पर **बोहतान** बांधे होंगे ! आह !

*जी चाहता है फूट के रोऊं तेरे ग़म में सरकार मगर दिल की क़सावत नहीं जाती*

(वसाइले बख़्शिश, स. 382)

## एक दूसरे को ग़ीबत से बचाने का त़रीक़ा

**ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जिन** जिन ख़ुश नसीबों का येह ज़ेह्न बन रहा हो कि हमें **ग़ीबत** के मूज़ी मरज़ से छुटकारा पाने के लिये कोशिशें तेज़ तर कर देनी हैं वोह आपस में त़ै कर लें कि हम में से अगर مَعَاذَاللہ कोई **ग़ीबत** शुरूअ़ कर दे तो जो मौजूद हो वोह अपनी क़ुव्वत के मुत़ाबिक़ ज़बान से टोक कर रोक दे और तौबा करने का कहे नीज़ अव्वल आख़िर صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب कह कर दुरूद शरीफ़ पढ़ाने के साथ कहे : ''تُوْبُوْا اِلَی اللہ!'' (या'नी **अल्लाह** पाक की त़रफ़ तौबा करो !) येह सुन कर **ग़ीबत** करने वाला कहे : اَسْتَغْفِرُاللہ (या'नी मैं **अल्लाह** पाक से बख़्शिश चाहता हूं) اِنْ شَآءَاللہ इस त़रह़ हाथों हाथ तौबा की सआ़दत मिल जाएगी। जिन्हों ने **ग़ीबत** करते न सुना हो उन से एह़तियात़ लाज़िमी है, आवाज़ व अन्दाज़ ऐसे न हों कि जिन को पता न था उन को भी मा'लूम हो जाए कि फ़ुलां ने مَعَاذَاللہ **ग़ीबत** की।

## किसी को काला कहना भी ग़ीबत है

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہِم तौबा के मुआ़मले में बिल्कुल नहीं शरमाते थे चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद

बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : हज़रते इमाम इब्ने सीरीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने एक शख़्स का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया : वोह आदमी सियाह फ़ाम (या'नी काला) है फिर फ़रमाया : "اَسْتَغْفِرُاللهَ" या'नी "मैं **अल्लाह** पाक से बख़्शिश तलब करता हूं" मैं समझता हूं कि मैं ने उस की **ग़ीबत** की है। (احیاءالعلوم،3/178)

## बिग़ैर शरमाए फ़ौरन तौबा कर लेनी चाहिये

**ऐ आशिक़ाने औलिया !** हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم का ख़ौफ़े ख़ुदा मरहबा ! इतने ज़बर दस्त बुज़ुर्ग ने फ़ौरन सब के सामने तौबा कर ली इस में येह भी दर्स मिला कि ख़ुदा न ख़्वास्ता कभी लोगों के सामने **ग़ीबत** वग़ैरा गुनाह सरज़द हो जाए तो एह़सास होते ही बिग़ैर शरमाए सब के सामने तौबा कर ली जाए। अगर बा'द में एह़सास हो गया और तौबा कर ली तो जिन जिन के सामने **ग़ीबत** का गुनाह किया उन को अपनी तौबा पर मुत्तलअ़ कर दिया जाए। तौबा का येह क़ाइदा ज़ेह्न में रखिये जैसा कि ह़दीसे पाक में है : **अल्लाह** पाक के आख़िरी रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जब तुम कोई गुनाह करो तो तौबा कर लो, اَلسِّرُّ بِالسِّرِّ وَالْعَلَانِيَةُ بِالْعَلَانِيَةِ या'नी पोशीदा गुनाह की तौबा पोशीदा और अ़लानिया गुनाह की तौबा अ़लानिया। (معجم کبیر،20/159،حدیث:331)

**इस** ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि बिला इजाज़ते शर्ई पीठ पीछे किसी मुसल्मान के जिस्मानी ऐब बयान करना मसलन ❁ काला ❁ भूरा ❁ बद सूरत ❁ कोढ़ी ❁ गन्जा ❁ मोटा ❁ लम्बा ❁ ठिगना ❁ काना ❁ अन्धा ❁ बहरा ❁ गूंगा ❁ बांडा ❁ भेंगा ❁ लूला ❁ लंगड़ा ❁ कुब्ड़ा कहना ग़ीबत है। बा'ज़ इस्लामी भाई काली रंगत वाले इस्लामी

भाई को बिलाली कहते हैं, बिला ज़रूरत येह भी न कहा जाए कि पीठ पीछे से कहना ग़ीबत में शुमार होगा क्यूं कि जिस को "बिलाली" के मुरादी मा'ना मा'लूम होंगे या'नी जो समझता होगा कि मैं काला हूं इस लिये मुझे "बिलाली" कह रहे हैं तो उस को बुरा लग सकता है। हां अगर किसी मख़्सूस इस्लामी भाई की पहचान ही बिलाली है तो इस निय्यत से बिलाली कहने में हरज नहीं।

## गुनाह होते ही फ़ौरन तौबा करना वाजिब है

हज़रते इमाम नववी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मन्क़ूल है : जूं ही गुनाह सादिर हो फ़ौरन तौबा कर लेना वाजिब है ख़्वाह सग़ीरा गुनाह ही क्यूं न हो।

(شرح مسلم للنووی، ص59)

## किसी की बात ग़ीबत न थी मगर आप ने ग़ीबत कह दी तो ?

**किसी** बात को गुनाह भरी **ग़ीबत** क़रार देने के लिये मा'लूमात होना ज़रूरी है अगर आप ने बे सोचे समझे किसी की बात को **ग़ीबत** ठहराया और उस के मुरतकिब को गुनहगार क़रार दिया और वोह गुनहगार नहीं था तो इस सूरत में आप गुनहगार होंगे **तौबा उस पर नहीं आप पर वाजिब हो जाएगी !** बहर हाल आपस में येह ज़रूर तै कर लीजिये कि **ग़ीबत** न हो रही हो फिर भी अगर किसी ने ग़लत फ़हमी के सबब تُوبُوا اِلَى الله! कह दिया तब भी हम "झगड़े" की कैफ़िय्यत पैदा न होने देंगे वरना शैतान को दूसरे ज़ाविये से या'नी लड़वाने और दिलों में बुग़्ज़ व कीना डलवाने के ज़रीए गुनाह करवाने का मौक़अ़ हाथ आ सकता है।

## झगड़े से बचने की फ़ज़ीलत

**ख़ुदा न ख़्वास्ता** कभी दो इस्लामी भाई लड़ पड़ें तो मौक़अ़ पा

कर तीसरा बुलन्द आवाज़ से صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب कह दे, दोनों दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए सुल्ह़ कर लें। जो ह़क़ पर होने के बा वुजूद नहीं झगड़ता उस का तो اِنْ شَآءَاللّٰه बेड़ा ही पार है। चुनान्चे **मदीने के सुल्त़ान**, रह़मते दो जहान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो ह़क़ पर होने के बा वुजूद **झगड़ा** नहीं करता मैं उस के लिये **जन्नत** के (अन्दरूनी) कनारे में एक घर का ज़ामिन हूं। (ابوداؤد، 4/332، حدیث:4800)

## اَسْتَغْفِرُاللّٰه कहने की फ़ज़ीलत

**लोगों** की मौजूदगी में हर त़रह़ की मा'सियत, बल्कि ना पसन्दीदा ह़रकत मसलन फ़ुज़ूल गोई सादिर होने पर बल्कि मौक़अ़ की मुनासबत से बिला उ़न्वान भी बुलन्द आवाज़ से अव्वल आख़िर صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب के साथ تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه! कह देना चाहिये कि हर वक़्त तौबा व इस्तिग़्फ़ार करते रहना कारे सवाब है। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : مَنِ اسْتَغْفَرَ اللّٰهَ غَفَرَ لَهٗ या'नी जो कोई **अल्लाह** पाक से इस्तिग़्फ़ार (या'नी मग़्फ़िरत त़लब) करेगा **अल्लाह** पाक उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा। (اَسْتَغْفِرُاللّٰه कहना भी इस्तिग़्फ़ार या'नी मग़्फ़िरत त़लब करना है) (ترمذی، 5/288، حدیث:3481)

## तौबा के तीन अरकान हैं

**अलबत्ता** गुनाह सरज़द हुवा हो तो उस की मह़ज़ रस्मी तौबा काफ़ी नहीं आ़शिक़ाने रसूल की मदनी त़रीक़, **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब "**बयानाते अ़त्त़ारिय्या**" (480 सफ़ह़ात), ह़िस्सए अव्वल के सफ़ह़ा 79 पर है : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तौबा की अस्ल **रुजूअ़ इलल्लाह** (या'नी **अल्लाह** पाक की त़रफ़ रुजूअ़ करना) है इस

के तीन रुक्न हैं : ﴾1﴿ ए'तिराफ़े जुर्म ﴾2﴿ नदामत ﴾3﴿ अ़ज़्मे तर्क (या'नी इस गुनाह को तर्क कर देने का पक्का इरादा) अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो इस की तलाफ़ी (या'नी नुक़्सान का बदला) भी लाज़िम मसलन तारिकुस्सलाह (या'नी बे नमाज़ी) के लिये पिछली नमाज़ों की क़ज़ा भी लाज़िम है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 12)

## सभी ग़ीबत से बचने की तरकीब करें

तमाम मुसल्मान, जुम्ला आ़शिक़ाने रसूल ब शुमूल दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस के अराकीन व मुबल्लिग़ीन, मुदर्रिसीन व त़लबए इ़ल्मे दीन, मुअ़ल्लिमीन व मुतअ़ल्लिमीन नीज़ मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िरीन वग़ैरा **ग़ीबत** से बचने के मज़्कूरा त़रीक़ों पर अ़मल करेंगे तो इन के लिये اِنْ شَآءَاللّٰه रह़मतें ही रह़मतें और मग़्फ़िरतें ही मग़्फ़िरतें होंगी। **या अल्लाह** पाक! मुसल्मानों को बद गुमानियों, **ग़ीबतों, तोह़मतों, चुग़्लियों, दिल आज़ारियों** वग़ैरा गुनाहों से मह़फ़ूज़ फ़रमा, **या अल्लाह** पाक! हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

## दुआए अ़त्तार

या रब्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم! जो भी इस्लामी भाई या इस्लामी बहन अपने यहां "एक दूसरे को **ग़ीबत** से बचाने का त़रीक़ा" राइज करे उस की और जो जो साथ दें उन सब की ग़ैब से मदद फ़रमा, उन सब की **ग़ीबत** बल्कि हर मा'सियत से ह़िफ़ाज़त फ़रमा कर उन के दिलों में अपनी और अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्ची मह़ब्बत भर दे। उन सब को जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िल फ़रमा कर प्यारे ह़बीब

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पड़ोस में बसा दे और येह तमाम दुआएं मुझ गुनहगारों के सरदार के हक़ में भी क़बूल फ़रमा। **या अल्लाह** पाक हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

*ख़ुदाया अजल आ के सर पर खड़ी है दिखा जल्वए मुस्तफ़ा या इलाही*
*मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़ता से हो ईमां पर ख़ातिमा या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश, स. 105,106)

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

## फ़ेहरिस्त


| | | | |
|---|---|---|---|
| जो अपने ऐबों को जान लेता है | 1 | बोहतान से तौबा का त़रीक़ा | 8 |
| **अल्लाह** पाक ऐब पोशी फ़रमाएगा | 2 | शक्की मिज़ाजों को तम्बीह | 10 |
| जहन्नम में चीख़ रहे होंगे ! | 3 | औ़रत पर तोहमत लगाने के सबब हलाकत | 10 |
| ग़ीबत ईमान में फ़साद पैदा करती है | 4 | | |
| ग़ीबत से तौबा का त़रीक़ा | 4 | एक दूसरे को ग़ीबत से बचाने का त़रीक़ा | 11 |
| बन्दे से भी मुआ़फ़ी मांगे | 5 | | |
| जिस की ग़ीबत की थी उस को पता चल गया तो ? | 6 | किसी को काला कहना भी ग़ीबत है | 11 |
| | | गुनाह होते ही फ़ौरन तौबा करना वाजिब है | 13 |
| दुन्या ही में मुआ़फ़ करवा लेने में आ़फ़िय्यत है | 8 | | |
| | | झगड़े से बचने की फ़ज़ीलत | 13 |
| बोहतान की ता'रीफ़ | 8 | दुआ़ए अ़त्तार | 15 |


www.dawateislami.net

صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

## फ़रमाने आख़िरी नबी

**अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : हर मुसल्मान की इ़ज़्ज़त, माल और जान दूसरे (मुसल्मान) पर ह़राम है। (ترمذی، 3/372، حدیث:1934)

978-969-722-231-5
01082227

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net